हादरपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी समिति

बिजनौर विश्वविख्यात हिमालय पर्वत की शिवालिक कड़ी की दक्षिणी तलहटी में बसा है। बिजनौर वास्तव में कृषि प्रधान जनपद है, जिसकी तीन चौथाई जनसंख्या गाँव में निवास करती है। पवित्र गंगा/राम गंगा नदियों का क्षेत्र होने से कृषि योग्य भूमि उर्वर है, जिले में 80% से अधिक गन्ने की खेती की जाती है। कृषि के साथ-साथ सहयोग प्रदान करने हेतु पशुपालन व दुग्ध उत्पादन को विकसित करने व प्रसारित करने के लिए 1973 में दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, बिजनौर की स्थापना की गई थी। दुग्ध संघ के द्वारा सर्वप्रथम 1973 में ही दुग्ध उपार्जन प्रारम्भ किया गया था, किन्तु समुचित प्रचार-प्रसार प्रशिक्षण की कमी व दुग्ध उत्पादकों की उदसीनता के कारण दुग्ध संघ वायवल नहीं हो सका, अतएव, फरवरी 85 में दुग्ध संकलन बंद करना पड़ा। ऑपरेशन फ़्लड योजना के अंतर्गत समुचित प्रचार-प्रसार व दक्ष मानव संसाधनों से युक्त होकर दुग्ध संघ ने पुन: 1990 से कार्य प्रारम्भ किया। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में दुग्ध संघों के मंडलीय दुग्ध संघों में विलय की प्रक्रिया में बिजनौर दुग्ध संघ का विलय मुरादाबाद दुग्ध संघ में किया जा चुका है।

पूर्व में बिजनौर दुग्ध संघ ने प्रगति की परंतु वर्तमान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में दुग्ध उपार्जन हेतु बड़ी प्रतिस्पर्धा एवं प्राइवेट डेरियों के द्वारा अभूतपूर्व रूप से दूध की खरीद दरों में की गई भारी वृद्धि से समितियों के स्तर पर दूध डायवर्जन के कारण दुग्ध उपार्जन मात्रा पर प्रतिकूल प्रभाव हुआ है। प्राइवेट डेरियों जैसे मधुसूदन, गोपालजी, पारस, जे के डेरी एवं असंगठित दुग्ध उद्योग की विकट प्रतिस्पर्धा के बावजूद दुग्ध उपार्जन में वृद्धि हेतु प्रभावी कार्ययोजना तैयार की गई है।

राष्ट्रीय डेरी योज़ना I (NDP I) के अंतर्गत दुग्ध संघ में गाँव आधारित दूध अधिप्राप्ति प्रणाली (VBMPS) एवं चारा विकास कार्यक्रम (Fodder Development Programme) उप-योजना का कार्यान्वयन दुग्ध संघ में किया जा रहा है। अभी तक गाँव आधारित दूध अधिप्राप्ति प्रणाली उप-योजना के अंतर्गत दुग्ध संघ द्वारा 100 दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों का गठन किया जा चुका है। सभी दुग्ध समितियों का गठन आणंद पद्धति के आधार पर किया गया है। पूर्व में स्थापित किए गए लगभग 400 ऑटोमैटिक मिल्क कलेक्शन यूनिट का दुग्ध उत्पादकों पर बहुत ही व्यापक एवं सकारात्मक प्रभाव पड़ा है तथा उन्हें समिति स्तर पर ही सही वज़न, वसा एवं वसा रहित ठोस परीक्षण एवं दूध की सही कीमत प्राप्त हुई है एवं दुग्ध क्रय प्रणाली में पारदर्शिता आई है।

राष्ट्रीय डेरी योज़ना I (NDP I) के अंतर्गत दुग्ध संघ में गाँव आधारित दूध अधिप्राप्ति प्रणाली (VBMPS) एवं चारा विकास कार्यक्रम के अंतर्गत गाँव में स्वच्छ दूध उत्पादन, सामाजिक एवं पर्यावरण पर कार्यशाला, कृषक अभिवृद्धि कार्यक्रम, साइलेज प्रदर्शन एवं डेरी सहकारिता जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से महिला सदस्यों को जागरूकता एवं सशक्तिकरण में सहयोग प्राप्त हुआ है। विभिन्न कृषकों को कृषक अभिवृद्धि कार्यक्रम के माध्यम से बाह्य प्रदेश में भ्रमण करने तथा दूध उत्पादकों से मिलने एवं आदर्श समिति देख कर सीखने को मिला है।

हादरपुर दूध उत्पादक सहकारी समिति लिमिटेड का प्रारम्भ राष्ट्रीय डेरी योजना I (NDP I) के गाँव आधारित दूध अधिप्राप्ति प्रणाली (VBMPS) उप-योजना के अंतर्गत 13 फरवरी 2016 को बिजनौर के कार्यक्षेत्र में किया गया था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकतर गाँव में निजी डेरियों एवं दूधियों की मौजूदगी है, जिससे वे सहकारी समितियों के किसानों को अधिक दाम का लालच देकर प्रतिस्पर्धा करते हैं और समय-समय पर निजी डेरियों एवं दूधियों और किसानों का शोषण भी करते हैं। किन्तु दुग्ध संघ